International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-05-2025, Accepted: 03-06-2025, Published: 17-06-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 62-64

# इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के चर्चित हिन्दी उपन्यासों में नैतिक मूल्यों का विघटन

**डॉ. जमुना सुखाम**
अध्यापिका, निलपद्मा उच्च माध्यमिक शिक्षा विद्यालय, इम्फाल, मणिपुर, भारत

**सारांश**
नैतिक मूल्यों का जन्म ही सामाजिक आवश्यकता के साथ हुआ है। समाज धर्म और राज्य द्वारा निर्मित नियमों के अनुकूल चलना ही नीति है और उन नियमों के अनुकूल आचरण से सम्बन्धित मूल्य ही नैतिक मूल्य है। दया, त्याग, पवित्रता, सत्य आदि भाष्वत मूल्यों को नैतिक मूल्य कहा जा सकता है। नैतिक मूल्यों का मूल आधार स्वार्थ का परित्याग है। इस उदात्त वृत्ति के अन्तर्गत सभी नैतिक मूल्य आ जाते हैं। नैतिक मूल्य हमें यह बताते हैं कि स्वयं की भलाई के साथ–साथ मानवता की भी भलाई करें। केवल स्वहित ही नैतिकता नहीं। असल में नैतिकता सफलतापूर्वक जीवन ज्ञापन करने की कला है। मनुष्य अपने कार्य व उद्देष्य की प्राप्ति के लिए सदैव प्रयत्न ील रहता है। इस प्रयत्न में उसे हमे ा उचित, अनुचित का ध्यान रखना पड़ता है। उचित–अनुचित का यह विवेकपूर्ण प्रयास ही नैतिकता कहलाता है। अर्थात नैतिकता उन सामाजिक नियमों एवं आद ाों को कहा जाता है जो मानव के व्यवहार एवं आचरण को नियंत्रित करे जिससे समाज में सुव्यवस्था एवं संतुलन बना रहे। समाज को सुदृढ़ एवं सुव्यस्थित बनाये रखने के लिए नैतिकता का वि ोश स्थान है।

**मूल शब्दः** अनुकूल आचरण, आवष्यकता, नैतिक, नियंत्रित, मूल्यों, विवेकपूर्ण, व्यवहार, सुदृढ, सुव्यस्थित

समाज को सुदृढ़ एवं सुव्यस्थित बनाये रखने के लिए नैतिकता का वि ोश स्थान है। नैतिकता को सामाजिक आद ाों और मानव जीवन के साथ जोड़ते हुए डॉ. टी. मीणा कुमारी लिखती है– ''सामाजिक आद ाों एवं नियमों को नैतिकता कहा जाता है। वस्तुतः नैतिकता मानव समाज की प्रमुख वि ोशता है।'' [1] मनुष्य समाज में जन्म लेता है, मनुष्य ही समाज निर्माण में सहायक भी होता है। अपने आचरण द्वारा मनुष्य समाज को प्रभावित करता है और समाज से वह प्रभाव भी ग्रहण करता है। अपने सद्व्यवहार द्वारा मनुष्य समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। मानव को सामाजिक महत्व प्रदान करने में जो पारस्परिक गुण होते हैं वास्तव में उन्हें ही नैतिकता कहा जाता है। अच्छे और बुरे की पहचान मनुष्य के व्यवहार से ही होती है। अतः नैतिकता का अभिप्राय मानव के व्यक्तित्व की उन महत्वपूर्ण वि ोशताओं से है जिन्हें समाज में उचित माना जाता है।

आज समाज नैतिक पतन की ओर उन्मुख है। सभ्य और सुसंस्कृत व्यवहार की आड़ में व्यक्ति जघन्य से जघन्य कर्म करने को उत्सुक दिखाई देते हैं। पूँजीपति एवं भाोशित वर्ग का भेद भी उन्हीं के द्वारा उत्पन्न किया हुआ है। अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए वह चरित्रगत अनैतिकता को भी आत्मसात् करते हैं। आधुनिक परिवे ा में विकसित होते हुए नगरीकरण, आवास समस्या तथा रोजी रोटी के अनवरत संघर्श ने पारिवारिक ढाँचे में तोड़–फोड़ की है। तत्फलतः जन्म लेती अनेक नयी स्थितियों के कारण हमारी जीवन पद्धति में नये मूल्य सहज विकसित होते जा रहे हैं। वर्तमान युग के युवा पीढ़ियों का परम्परागत मूल्यों के प्रति विद्रोह को पस्तुत करते हुए सौ जयश्री बरहाटे लिखते है– ''प्रत्येक समाज में उच्चता, श्लील, अश्लील, पाप और पुण्य के अपने मानदण्ड होते हैं। ये मानदण्ड व्यक्ति की उच्छंखला पर नियन्त्रण रखते हैं। आज का युवा वर्ग परम्परागत नैतिक मानदण्डों के खिलाफ है।'' [2]

वर्तमान समाज में कई तरह की आर्थिक, राजनैतिक, पारिवारिक, सम्मिलित कुतुम्ब की विशमताएँ और मूल्यों के विघटित रुप देखने को मिलता है। आधुनिक युग में मानवीय स्तर पर बढ़ रहे मूल्यों के विघटन, सामाजिक समस्याएँ, कई तरह के विना ाकारी स्थिति पैदा कर लोगों की संवेदनाओं एवं भावनाओं का ह्रास होते हुए सद्भावना, प्रेम तथा अपनत्व की भावना जैसे विलुप्त होकर जीवन के मूल्य बदल रहे हैं।

ज्ञानप्रका ा विवेक के उपन्यास 'आखेट' में वर्तमान समाज, व्यक्ति की परिवर्तित मानसिकता और मूल्यहीनता को स्पष्टतः दिखाया है। आधुनिक युग में व्यक्ति अपने स्वार्थ सिद्ध करने, किसी फल की प्राप्ति हेतु कभी भाुभ तो कभी अ ाुभ रास्ते को अपना लेता है और कई समाज विरोधी कार्य कर लेता है। उपन्यास का मुख्य पात्र चेतन संस्कारों और नीतियों से भरा हुआ है। यह संस्कार अपने माता–पिता तथा परिवारवालों से पाया है। लेकिन उनका जीवन सामाजिक प्रभावों के चलते परिवर्तित होने लगा है। चेतन अपनी आजीविका और परिवार के आर्थिक टंगी को सहारा देने के उद्देष्य से नौकरी पाकर जिस बीमा–कंपनी में आता है, वहाँ भ्रष्टाचार ऊँची सीमा तक पहुँचा हुआ है। इस इंष्योरेंस कम्पनी के रीजनल मैनेजर मिस्टर आनन्द, ऑफिस के सुपरिटेंडेंट नरे ा कुमार, महे ा कुमार और सुरे ा कुमार और अन्य पात्र प्रेमसिंह के चरित्रों में नैतिकता और मूल्यों के भ्रष्ट होने का संकेत मिलता है। अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए ऑफिस में मिस्टर आनन्द कई तरह के चाल चलता है। प्रेमसिंह भी हर महीने कमी ान के नाम पर भ्रष्ट रास्ते की ओर जाता है लेकिन ये लोग कभी भी अपने को गलती का एहसास नहीं होता। जिस रास्ते पर वह लोगों को ठगता है, उसी रास्ते में ही अपने को खु ाी महसूस होता है। उसमें मूल्यों का कोई एहसास नहीं हैं। इस उपन्यास में व्यक्ति के भीतर पनप रही मानसिकता, मूल्यहीनता और वर्तमान समाज में बदल रहे जीवन मूल्यों का चित्रण करते हुए उपन्यास के तीन प्रमुख पात्र जो डर्टी थ्री कहकर जाना जाता है, जैसे नरे ा कुमार, सुदे ा कुमार और महे ा कुमार जो क्रम ाः बीमा कंपनी में पर्सनल अकाउन्ट्स और क्लेम विभागों के प्रभारी हैं, उन्हें यह ज्ञात हो जाता है कि लोगों के मन में भय कैसे पैदा करें। लोग तीनों को डर्टी थ्री कहकर अपने मन में पनपती नफरत को प्रकट करते हैं यद्यपि भयव ा यह प्रकटीकरण प्रायः नेपथ्य में ही होता है। मि. आनन्द का दिमाग हमे ा स्टाफ के सदस्यों को एक दूसरे के खिलाफ बनाये रखने में लगा रहता है। इसमें मूल्यहीनता और अपने फायदे के लिए दूसरों की परवाह न करने और संकुचित मानसिकता का चित्र देखने को मिलता है जो वर्तमान युग की देन कहा जा सकता है।

संजय कुन्दन के उपन्यास 'टूटने के बाद' में पात्रों के माध्यम से नैतिक मूल्यों के विघटन और आधुनिक युग की महत्वाकांक्षी

प्रवृत्तियों का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत किया है। उपन्यास का मुख्य पात्र रमे ा त्रिपाठी जो घर के मुखिया है, अत्यधिक महत्वाकांक्षी है। रमे ा त्रिपाठी डमरुगंज के ि ाव मन्दिर के पुजारी पंडित भोलानाथ त्रिपाठी का बेटा है। कई कमियों और मुश्किलों के बावजूद को ाों दूर पैदल जाकर पढ़ाई की, मेहनत की और जब उन्हें सचिवालय के सहायक रुप में नौकरी मिली तो उसकी इच्छाएँ बढ़ने लगी। एक छोटे से नौकरी से मन न भर रमे ा, पत्नी और बच्चों को छोड़कर दूर काम के लिए चला जाता है। परिवारवालों से दूर रहकर पत्नी और बच्चे भी धीरे धीरे अपने ही जिन्दगी से ऊब और अलगाव होने लगते हैं। अप्पू जो अकेले दिल्ली में रहता है, अपनी माँ को मोबाइल पर एस.एम.एस भेजता है कि वह घर छोड़कर जा रहा है, उसे ढूंढ़ने की कोशिश न करे। इस बात से अप्पू की माँ विमला परे ाान हो जाती है। जब बेटे के बारे में परे ाान होकर विमला अपने पति रमे ा को बताता है तो वह इस बात को बड़ी आसानी से उड़ा देता है। रमे ा पिता होते हुए भी उतना ध्यान बच्चों पर नहीं देता जितना देना चाहिए। वह आसानी से कह देता है– ''कोई बच्चा तो है नहीं। चला गया होगा किसी दोस्त के यहाँ। फिर आ जाएगा।'' [3] इस जवाब से विमला हैरान हो जाती है कि कैसे अब रमे ा बदल गया है। पहले तो बच्चों की हर बात पर बहुत सीरियस हो जाते थे। उसकी महत्वाकांक्षी इच्छाओं ने नैतिकता को बहुत कुछ बदलके रख दिया है। रमे ा की जिन्दगी अब उड़ान भरने लगी है। अपने काम के सिलसिले में कई जगह घूमने लगता है। उसकी दोस्त मंडली भी बदल गये हैं। वह राजनेताओं, नौकर ााहों और बुद्धिजीवियों से घिरे रहने लगे है। लेखक ने वर्तमान समाज में व्यक्ति के नैतिक मूल्यहीनता का चित्रण रमे ा त्रिपाठी के माध्यम से दिखाया है। जब वह अपने ही जैसे समाजसेवियों के बीच होते तो खुद को एक गरीब व्यक्ति बताते और अपने संघर्श का बढ़ा चढ़ाकर वर्णन करते लेकिन जब नेताओं, अधिकारियों के बीच होते तो खुद को डमरूगंज का जमींदार बताते। वर्तमान में व्यक्ति अर्थ के चलते कितना गिर सकता है इसका चित्रण लेखक ने रमे ा की अनैतिकता के माध्यम से दिखाया है। दूसरी तरफ उसका बड़ा बेटा अभय जिस लड़की से भ्ाादी करने जा रहा है वह तलाक ुदा है। लेकिन रमे ा इस रिश्ते से बहुत खु ा है क्योंकि लड़की का बाप बहुत पैसे वाले है। बहुत बड़े नामी और अमीर इंडस्ट्रियेलिस्ट है।

'यहीं कहीं था घर' उपन्यास में लेखिका ने व्यक्ति जीवन के संघर्श, उसके निजी अनुभवों एवं समस्याओं को पात्रों के माध्यम से दिखाया है। साथ ही वर्तमान समाज की समस्याओं के साथ साथ नैतिक मूल्यों के भ्रष्ट होने का चित्रण भी किया है। उपन्यास के पात्रों जैसे नत्थू लोहार, दिवाकर, वि ााखा, सुजाता और उसके घर आने वाले स्वामीजी के चेलों के माध्यम से वर्तमान समाज के भ्रष्ट हुए मूल्यों तथा अनैतिकता का चित्र प्रस्तुत किया गया है। नत्थू लोहार गोदाम में गेहूं–चावल के वजनी बोरे पहुँचाने का काम करने वाला लड़का है। जिसके घर में किराये के मकान पर सुजाता और वि ााखा के परिवार रहते हैं, उसी मकान मालिक का नौकर है। उसके मकान के बाहर की गली से होते हुए रोज वि ााखा और सूजाता स्कूल आती जाती है। स्कूल जाते और आते समय बाहर की सड़क और मकान की सीढ़ियों के बीच अंधेरे गलियारों को पार कर चलना पड़ता है। वि ााखा के लिए यह गलियारा पार करना जंग जितने के बराबर है। क्योंकि इस गलियारे के बीच नत्थू लोहार जो बारह साल का नौकर है, वि ााखा के इंतजार में रहता और अपने व ा में करने की कोि ा ा करता रहता है। लेखिका ने नत्थू के माध्यम से नैतिक मूल्यहीनता और भ्रष्ट व्यवहार का चित्र प्रस्तुत किया है। मूल्यों के विघटित होने से व्यक्ति कहाँ से कहाँ तक गिर सकता है, इसका प्रामाणिक रूप लेखिका ने नत्थू लोहार और उसके व्यवहार द्वारा दिखाया है। उपन्यास के खण्ड दो 'घररू दो' में दिवाकर के माध्यम से व्यक्ति का बदलता स्वभाव एवं आचरण का स्वरूप दिखाया गया है। दिवाकर और चित्रा एक दूसरे से प्यार कर प्रेम विवाह किया था। चित्रा के माँ–बाप ने इस रिश्ते को स्वीकार नहीं किया था। इसलिए कई मु ि कलों के बावजूद चित्रा दिवाकर के साथ रि तों में बंध गयी थी। दोनों ने अपने माता–पिता के खिलाफ जाकर भ्ाादी की। कई मु ि कलों का सामना किया। चित्रा के लिए तो उसके मैकेवालों से हमे ाा के लिए रि ता ही खत्म हो गयी। इन सब घटनाओं के बावजूद भी भ्ाादी के कुछ सालों बाद दिवाकर की नैतिकता भ्रष्ट हो जाती है। वह पत्नी चित्रा से कटा सा रहता है। अपने बेटे मोनू से तो वह बहुत दूरी बनाया हुआ था। पत्नी के अतिरिक्त दिवाकर अन्य स्त्री से संबंध बनाता है लेकिन दिवाकर को इससे कोई गलती महसूस नहीं होता। छोटी–छोटी बातों पर दोनों के बीच किच–किच व झगड़ा होता रहता है। झगड़ते वक्त दिवाकर चित्रा को कहता है– ''तुझसे मेरी खु ाी देखी नहीं जाती थी। मैं खु ा था तो तेरी छाती पे सांप लोट रहा था। तेरा घर, तेरी जगह, तेरा ओहदा सब सुरक्षित था। तेरी मिसेज मल्होत्रा होने की सीट रिजर्व थी यहां। उस पर कोई डाका नहीं डाल रहा था, फिर तुझे क्या परे ाानी थी, किस बात की तकलीफ थी तुझे? मैं तुझे छोड़ तो नहीं रहा था।'' [4] इसमें दिवाकर का स्वभाव, परायी स्त्री के प्रति मोहासक्त होने के कारण पत्नी पर गुस्सा आदि दिखाया गया है।

'बरखा रचाई' उपन्यास में असगर वजाहत ने कई सामाजिक समस्याओं के साथ साथ वैयक्तिक समस्या और व्यक्ति के अनैतिकता का चित्रण किया है। उपन्यास के एक पुरुश पात्र भाकील और उसका बेटा कमाल के माध्यम से राजनैतिक हलचल और उसमें होने वाले भ्रष्ट आचरण, मूल्यहीनता और अवसरवादी मानसिकता का चित्र प्रस्तुत किया है। भाकील का बेटा कमाल राजनीति में आकर ऐसा काम करता है जो व्यक्ति के मानवीयता पूरी तरह गिर जाता है। भाकील पावर एवं एनर्जी मंत्री होने के बाद केन्द्रीय केबिनेट मंत्री बनता है। लेकिन अपने ही बेटे कमाल ने इलेक्षन में टिकट पाने के लिए अपने पिता भाकील पर हमला करवाया। लेकिन भाकील को विष्वास नहीं होता कि अपने ही बेटे द्वारा उसपर हमला हुआ। उसको लगा था कि यह जानलेवा हमला उसका सबसे बड़ा दु मन हाजी पाटा ने ही करवाया होगा लेकिन बाद में पता चला कि राजनीति में प्रवे ा करने और टिकट आसानी से प्राप्त करने के लिए उन्हीं के बेटे कमाल ने उसपर हमला किया। इस पर भाकील टूट जाता है। वह अत्यन्त दुःखी हो जाता है। अपनी मनःस्थिति और दुःख की बातें अपने दोस्तों साजिद और अहमद को इस प्रकार बताता है– ''मैंने उसे क्या नहीं दिया? तुम दोनों जानते हो...अच्छे–से–अच्छे स्कूलों में एडमी ान कराया...कभी सख्ती नहीं की...कभी पैसों के लिये तरसाया नहीं...स्टूडेंट यूनियन का इलेक्षन लड़ने के लिए पांच लाख दिये...गाड़ी? अभी पिछले साल नयी गाड़ी खरीदकर दी है... और ये सब जानते हैं कि मेरा पॉलिटिकल जां ाीन वही है...उसी को ये सब मिलेगा...।'' [5] इसमें कमाल के माध्यम से व्यक्ति की नैतिक मूल्यहीनता और भ्रष्ट आचरण का चित्र प्रस्तुत किया है।

उपन्यास के एक और पात्र निगम साहब के द्वारा लेखक ने एक और मूल्यहीनता का चित्रण किया है। निगम का धंधा दलाली करना है। पैसा कमाने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार है। वह पत्नी के माध्यम से बहुत सारा काम निकालना चाहता है। जिन जिन लोगों के संपर्क में आता है उन्हीं लोगों से फायदा देखता है। राजाराम चौधरी नामक पर्यटन मंत्री को भी घर बुलाकर कुछ फायदा उठाने का प्रयास करता है। लेखक के भाब्दों में– ''वह अपनी पत्नी का जन्मदीन मना रहा है और उसमें चीफगेस्ट के रुप में राजाराम चौधरी को बुलाया है। वैसे एकाध बार यह बात कॉफी हॉउस में उड़ती–उड़ती सुनी थी कि निगम अपनी पत्नी के माध्यम से बहुत से काम साधता है। उसकी पत्नी

सुंदर है। बच्चा कोई नहीं है।'' [6] इसमें व्यक्ति के नैतिक मूल्यहीनता और गिरे हुए चरित्र का चित्र देखने को मिलता है जिसमें अपने काम व फायदे के लिए अपनी ही पत्नी का इस्तेमाल करता है।

**संदर्भ ग्रंथ**


1. शिवप्रसाद सिंह के कथा–साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ. टी. मीना कुमारी,पृ 40.
2. हिन्दी उपन्यासरू सातवाँ दशक, सौ. जयश्री बरहाटे पृष्ठ 129.
3. टूटने के बाद, संजय कुन्दन, पृ 8. कुन्दन, संजय, टूटने के बाद, प्रथम संस्करण 2009.
   प्रकाशन–भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली 3ण
4. यहीं कहीं था घर, सुधा अरोड़ा, पृ 156. रंगनाथ, जयंती, खानाबदोश ख्वाहिशें, प्रथम संस्करण 2009 प्रकाशन–सामयिक प्रकाशन, दिल्ली ण
5. बरखा रचाई, असगर वजाहत, पृ 216.
6. वही, पृ 110.
7. अखिलेश, अन्वेषण, पहला संस्करण 1992, दूसरा संस्करण, 2009.प्रकाशन– राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 51.
8. अग्रवाल, विजयकुमार, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामंती जीवन, प्रथम संस्करण 1990. प्रकाशन–विक्रम प्रकाशन, कृष्णनगर दिल्ली 51
9. कुमारी, डॉ. टी. मीना, शिवप्रसाद सिंह के कथा–साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, प्रथम संस्करण 2007. प्रकाशन–अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर 208014.
10. कुलकर्णी, डॉ. अरूण, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में संस्कृति और इतिहास, प्रथम संस्करण 2007. प्र. –चिन्तन प्रकाशन, हंसपुरम् कानपुर 21.
11. कुलकर्णी, डॉ. रेवा, हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी, प्रथम संस्करण 1994. प्रकाशन–चन्द्रलोक प्रका ान, कानपुर–208011.